

A नए नियम में भविष्यद्वक्ताओं की भूमिकाएँ

- ❖ नए नियम में भविष्यवाणी को पवित्र आत्मा के एक वरदान के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो बहुतायत से उंडेला गया था (रोमियों 12:6)। एक ही कलीसिया में इतने अधिक भविष्यद्वक्ता हो सकते थे कि उन्हें बोलने के लिए बारी-बारी से बोलना पड़ता था (1 कुरिन्थियों 14:29-31)।
- ❖ इन भविष्यद्वक्ताओं ने कौन-कौन सी भूमिकाएँ निभाईं? (प्रकाशितवाक्य 19:10; 1:1; इफिसियों 4:11-12; 1 कुरिन्थियों 14:3; प्रेरितों के काम 15:32)।
 - यीशु की गवाही देना। उनका मुख्य कार्य लोगों को यीशु के पास ले जाना था
 - भविष्य की घोषणा करना। उन्होंने उन घटनाओं को प्रकट किया जो वर्तमान समय तक फैली हुई थीं
 - आत्मिक उन्नति। एक ऐसी मजबूत कलीसिया का निर्माण करना जो शत्रु के आक्रमणों का सामना कर सके
 - प्रोत्साहन। पाप को प्रकट करना, ताकि लोग पश्चात्ताप कर सकें
 - सांत्वना। यहूदा और सीलास को इसी विशेष उद्देश्य के लिए कलीसियाओं के पास भेजा गया था।

B नए नियम के भविष्यद्वक्ता:

❖ यीशु, प्रतिज्ञात भविष्यद्वक्ता

- यीशु के समकालीन लोग उसे एक भविष्यद्वक्ता मानते थे (मत्ती 21:11; मरकुस 6:15; लूका 7:16; यूहन्ना 6:14)। उसने स्वयं भी यह उपाधि अपने लिए स्वीकार की (मरकुस 6:4; लूका 13:33)।
- पतरस ने स्पष्ट किया कि यीशु वही भविष्यद्वक्ता और मसीहा था, जिसकी घोषणा मूसा और अन्य भविष्यद्वक्ताओं ने की थी (व्यवस्थाविवरण 18:15; प्रेरितों के काम 3:18-26)।
- लेकिन यीशु ने परमेश्वर का वचन नहीं लिखा, बल्कि वह स्वयं वचन है (यूहन्ना 1:1)। वह केवल "अन्धियारे स्थान में प्रकाश देने वाली ज्योति" नहीं है, जैसे अन्य भविष्यद्वक्ता थे, बल्कि वह स्वयं ज्योति है (2 पतरस 1:19; यूहन्ना 1:9; 8:12)।
- उसका कार्य किसी भी भविष्यद्वक्ता के कार्य से बढ़कर है। अपने जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के कारण यीशु ही एकमात्र ऐसा है जो हम सभी को अनंत जीवन दे सकता है।

❖ प्रेरित और भविष्यद्वक्ता

- नए नियम के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं में कुछ सामान्य विशेषताएँ थीं:
 - (1) वे परमेश्वर द्वारा भेजे गए लोग हैं (लूका 11:49)
 - (2) उन्हें कलीसिया का नेतृत्व करने के लिए वरदान दिए जाते हैं (1 कुरिन्थियों 12:28-29; इफिसियों 4:11-12)
 - (3) वे कलीसिया की नींव हैं (इफिसियों 2:20)
 - (4) उन्हें प्रकाशन प्राप्त होते हैं (इफिसियों 3:5)
 - (5) वे न्याय के कारण आनन्दित होते हैं (प्रकाशितवाक्य 18:20)
- जब प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं का एक साथ उल्लेख किया जाता है, तो प्रेरितों का उल्लेख भविष्यद्वक्ताओं से पहले किया जाता है (लूका 11:49 को छोड़कर)। पतरस प्रेरितों की तुलना प्राचीन भविष्यद्वक्ताओं से करता है (2 पतरस 3:2)।
- यीशु ने स्वयं प्रेरितों को विशेष रूप से अपने पुनरुत्थान के गवाह होने के लिए नियुक्त किया था (प्रेरितों के काम 10:40-41)।
- नए नियम में कई भविष्यद्वक्ताओं का उल्लेख किया गया है, जिनमें से कुछ के नाम भी दिए गए हैं: बरनबास (प्रेरित), शमौन, लूसियुस, मनहेम, शाऊल (प्रेरित), यहूदा, सीलास और अगबुस (प्रेरितों के काम 11:27; 13:1; 15:32; 19:6-7; 21:10)।

❖ भविष्यद्वक्तिनियाँ

- नए नियम में नाम से उल्लिखित एकमात्र भविष्यद्वक्तिन हन्नाह है, जिसने "उस बालक [यीशु] के विषय में उन सभी लोगों से बात की, जो यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोह रहे थे" (लूका 2:36-38)।
- सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पुस की चार बेटियों को भी भविष्यवाणी का वरदान प्राप्त था (प्रेरितों के काम 21:8-9)।
- इसके अलावा, भविष्यवाणी का उल्लेख एक सामान्य वरदान के रूप में किया गया है, जो स्त्रियों और पुरुषों दोनों को दिया जाता है (1 कुरिन्थियों 11:4-5)।
- योएल ने पहले ही घोषणा कर दी थी कि पवित्र आत्मा इस प्रकार कार्य करेगा कि बेटे-बेटियाँ, बूढ़े-जवान, दास और दासियाँ भविष्यवाणी करेंगे (योएल 2:28-29)।

❖ पौलुस के सहकर्मी

- प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं और भविष्यद्वक्तिनियों के अलावा, पौलुस के कुछ सहकर्मियों का भी उल्लेख मिलता है, जिन्होंने सीलास और बरनबास की तरह भविष्यवाणी का वरदान प्राप्त किया था:
 - (1) तीमुथियुस: सेवकाई के लिए उसके बुलाए जाने की भविष्यवाणी की गई थी (1 तीमुथियुस 1:18)। उसने पौलुस के साथ मिलकर इन पत्रियों को लिखा: 2 कुरिन्थियों (2 कुरिन्थियों 1:1); फिलिप्पियों (फिलिप्पियों 1:1); कुलुस्सियों (कुलुस्सियों 1:1); 1 थिस्सलुनीकियों (1 थिस्सलुनीकियों 1:1); 2 थिस्सलुनीकियों (2 थिस्सलुनीकियों 1:1); और फिलेमोन (फिलेमोन 1:1)।
 - (2) तीतुस: उसने भविष्यद्वक्ता के कई कार्य किए, जैसे आत्मिक उन्नति (2 कुरिन्थियों 8:6); प्रोत्साहन (तीतुस 2:6, 9, 15); और सांत्वना (2 कुरिन्थियों 7:13)।

❖ झूठे भविष्यद्वक्ता

- यीशु ने चेतावनी दी कि झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, जिन्हें उसने “फाड़ खाने वाले भेड़िए” कहा (मत्ती 24:24; 7:15)। ये झूठे भविष्यद्वक्ता आरंभिक कलीसिया के भीतर भी दिखाई देने लगे थे (1 यूहन्ना 4:1)।
- पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों को चेतावनी दी कि उनके बीच “फाड़ खाने वाले भेड़िए” उठ खड़े होंगे (प्रेरितों के काम 20:29)। उसने कुरिन्थियों को “झूठे प्रेरितों” के अस्तित्व के बारे में भी चेतावनी दी (2 कुरिन्थियों 11:13)।
- सच्ची भविष्यवाणी परमेश्वर के वचन के अनुरूप होती है, मसीह की ओर संकेत करती है और कलीसिया की आत्मिक उन्नति करती है, जबकि झूठे भविष्यद्वक्ता फूट डालने वाली शिक्षाओं और अपने स्वार्थ को बढ़ावा देते हैं।
- हमें विश्वासियों के रूप में भविष्यद्वक्ताओं की जाँच करने और यह सुनिश्चित करने के लिए बुलाया गया है कि उनके सभी सन्देश पवित्रशास्त्र के अनुरूप और मसीह-केंद्रित हों।
- झूठे भविष्यद्वक्ताओं से (और उन दुष्ट शक्तियों से जो उनका मार्गदर्शन करती हैं) हमारी एकमात्र सुरक्षा आत्मिक युद्ध के हथियारों को धारण करना है जो परमेश्वर ने हमारे लिए प्रदान किये हैं (इफिसियों 6:10-18)।

परिशिष्ट: एलेन जी. व्हाइट की सेवकाई के मुख्य सिद्धांत

एलेन जी. व्हाइट की सेवकाई के दो मूलभूत केंद्र थे: लोगों को यीशु के पास लाना और उनका ध्यान बाइबल की ओर निर्देशित करना।

पहला केंद्र: यीशु

1888 के अधिवेशन के बाद, जब उनसे चर्चा किए गए विषयों के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने उत्तर दिया: “मैं पिछले 45 वर्षों से तुम्हारे सामने यही प्रस्तुत करती आई हूँ—मसीह का अतुलनीय आकर्षण” (प्रवचन और वार्ताएँ, खंड 1, पृष्ठ 116)।

दूसरा केंद्र: बाइबल

एलेन ने कभी यह दावा नहीं किया कि उनकी रचनाएँ बाइबल से श्रेष्ठ हैं, बल्कि उन्होंने हमेशा आग्रह किया कि उनकी रचनाओं को बाइबल के द्वारा परखा जाए। प्रभु की एक संदेशवाहक के रूप में, वह स्वयं को एक “छोटी ज्योति” मानती थीं, जो लोगों को “बड़ी ज्योति,” अर्थात् बाइबल की ओर मार्गदर्शन करती है (चयनित सन्देश, खंड 3, पृष्ठ 29)।